-उपसंहार-

प्रभा खेतान के उपन्यासों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने के बाद यह कहा जा सकता है कि समकालीन महिला लेखिकाओं में प्रभा खेतान का स्थान महत्वपूर्ण है। उनका व्यक्तित्व बहुआयामी है। हिंदी जगत में विलक्षण प्रतिभा संपन्न लेखिका के रूप में वे पहचानी जाती है। कवयित्री, उपन्यासकार, संपादक, चिंतक, अनुवादक, अनुसंधाता, समाजसेविका, आत्मकथाकार तथा सफल उद्यमी के रूप वे काफी चर्चित रही हैं। समकालीन हिंदी साहित्य जगत में सजग स्त्रीवादी उपन्यासकार के रूप में वह एक ऐसी लेखिका है जिसने अपनी त्रासदमय स्थिति को अपने साहित्य में अभिव्यक्त किया है। उनका व्यक्तित्व उनके कृतित्व में शत-प्रतिशत प्रतिबिंबित हुआ है। वे स्वीकार करती हैं कि, 'जब मैं लिखती हूँ तब अपने आप को पेश करती हूँ।' उनका साहित्य उनकी मौलिक सृष्टि हैं। जीवन की अनुभूति की अभिव्यक्ति प्रभा के साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता रही है।

प्रभा खेतान के उपन्यासों का विश्लेषणात्मक अध्ययन, इस विषय पर किये गये इस शोध अध्ययन ने यह स्पष्ट किया है कि, प्रभा ने अपने भोगे हुए यथार्थ का प्रभावी चित्रण किया है। कलकत्ता के बालीगंज मकान नं.71 में रामचंद्र खेतान के पाँच बेटों में से एक श्री लादुरामजी खेतान के संकीर्णतावादी हिंदू, सनातन मारवाड़ी परिवार में पाँचवी संतान के रूप में 1 नवंबर 1942 को प्रभा का जन्म हुआ। उनकी माता पूरनी देवी विद्रोहीणी एवं महत्वकांक्षी महिला थी। माता के विद्रोही स्वभाव के प्रभाव स्वरूप उनका व्यक्तित्व भी विद्रोही रहा है। मारवाड़ी समाज परंपराओं की शृंखला में बंधा हुआ है। इस समाज की नारी रूढ़ियों और परंपराओं से कभी मुक्त नहीं हो पायी है। प्रभा खेतान के साहित्य का निर्माण इन्हीं परिवेशगत स्थितियों के कारण हुआ। इसलिए उनके काव्य, उपन्यास, आत्मकथा में परिवेश का प्रभाव परिलक्षित होता है। प्रभा का बचपन उपेक्षित एवं प्रताड़ित था। माता के प्यार से वंचित बच्ची का आश्रय और सहारा दाई माँ थी। दाई माँ की छत्रछाया में पली-बड़ी प्रभा को पिता की मृत्यू के पश्चात असुरक्षितता का अनुभव होता है। उच्च शिक्षा को लेकर उन्हें निरंतर पारिवारिक विरोध सहना पड़ा। फिर भी उन्होंने दर्शन शास्त्र में पीएच.डी की उपाधि

प्राप्त की। साहित्य के प्रति उनकी रूचि बचपन से रही। वे मन्नू भंडारी और महादेवी वर्मा से प्रभावित रही। उनके लेखन की शुरूवात काव्य से हुई। इसमें अपने जीवन की त्रासदी, पीड़ा और अपमान को उन्होंने व्यक्त किया। उन्होंने अपरिचित उजाले, सीढ़ियाँ चढ़ती हुई मैं, एक और आकाश की खोज में, कृष्णधर्मा मैं, हुस्नाबानो और अन्य कविताएँ, अहल्या, आदि छह काव्यसंग्रहों का सृजन किया। अपने भोगे हुए यथार्थ को पूरी व्यापकता से व्यक्त करने के लिए उन्होंने उपन्यास विधा को चुना। उनकी नायिकाओं में स्वयं उनका वास्तव चित्रित है। उनका प्रत्येक उपन्यास उनकी आत्मकथा का अंश है। वास्तव में उपन्यास जीवन का गद्य रूप महाकाव्य है। प्रभा ने उपन्यास विधा को चुनकर अपने जीवन की महाकथा सुनाई है। उनके 'आओ पेपे, घर चलें', 'तालाबंदी', 'अपने-अपने चेहरे', 'पीली आंधी', 'छिन्नमस्ता' आदि बृहद् उपन्यास है और 'एडस्', 'स्त्री-पक्ष' और 'अग्निसंभवा' आदि लघु उपन्यास पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं।

उनका अध्ययन मनन चिंतन अत्यंत गहन होने के कारण उन्होंने उपन्यास के साथ-साथ चिंतनपरक साहित्य का भी सृजन किया है। अपने मन और मस्तिष्क को प्रभावित करने वाली अठारह अफ्रीकी कवियों की कविताओं का अनुवाद 'साँकलों में कैद क्षितिज' नाम से किया है। प्रसिद्ध फ्रेंच लेखिका सिमोन-द-बोउवार की कृति 'द सेकंड सेक्स' का अनुवाद 'स्त्री उपेक्षिता ' नाम से किया है। अपने अनुभव को प्रामाणिकता से चित्रित करने के लिए प्रभा खेतान ने 'अन्या से अनन्या' इस आत्मकथा का सृजन किया। उन्होंने एक और पहचान, पितृसत्ताक के नये रूप और हंस मासिक पत्रिका के महिला विशेषांक के संपादन का कार्य भी किया।

बहुआयामी जीवन की धनी प्रभा खेतान का कृतित्व उनकी असाधारण सृजन शक्ति का परिचायक है। प्रभा के व्यक्तित्व में स्वयं निर्णय लेने की प्रवृत्ति झलकती है। उनका विचार है कि, विवाह ओवरडेटेड संस्था है। इस संस्था को बहुत अधिक महत्व देने की आवश्यकता नहीं। डॉ.सर्राफ से उनका रिश्ता अलग किस्म का था, जिसे नाम देने हेतु वह खुद संभ्रमित थी। आजीवन अविवाहित रहकर उन्होंने डॉ.सर्राफ से आत्मीयता का संबंध स्थापित किया। प्रभा खेतान का जीवन संघर्षपूर्ण रहा है, पर

उनका दृष्टिकोण आशावादी रहा। वे कभी भी संकटों, संघर्षों एवं अभावों से हारी नहीं और न ही उनसे पलायन किया। उच्चशिक्षित, अधिकारों के प्रति सजग, स्वाभिमानी एवं दृढ़ता से परिस्थितियों का सामना करने वाली स्त्री के रूप में सामने आती है। प्रतिभावान प्रभा अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ी। संपन्न मारवाड़ी समाज में जन्म लेकर परंपराओं को चुनौती देते हुए उन्होंने चमड़े का व्यवसाय शुरू किया और उसमें सफलता प्राप्त की।

साहित्यिक क्षेत्र में अनेक बार उनकी प्रशंसा एवं कटु आलोचना भी होती थी। परंतु न वे क्रोधित होती थी और न असंतोष प्रकट करती थी। दोषारोपण और आलोचना करनेवालों के साथ वे आत्मविश्वास से बात करती थी। वे आत्मप्रशंसा की इच्छुक नहीं थी। घुमक्कड स्वभाव की प्रभा प्रतिभा एवं परिश्रम से संसार में श्रेष्ठ साहित्यकार एवं श्रेष्ठ उद्योजिका का दर्जा हासिल कर पायी थी। इसी कारण उन्हें रत्न शिरोमणि पुरस्कार, टॉप पर्सनाल्टी एवार्ड, प्रतिभाशाली महिला पुरस्कार, इंदिरा गांधी सॉलिडियारिटी सम्मान, बिहारी पुरस्कार, राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार एवं चेंबर्स ऑफ कॉमर्स की प्रथम महिला अध्यक्षा का स्थान प्राप्त हुआ।

प्रभा खेतान की जीवन रेखा से स्पष्ट होता है कि, संघर्ष ही उनका आदि से अंत तक साथी रहा। जितना संघर्ष प्रभा ने अपने जीवन किया, वह एक स्त्री में शक्ति का संचार करने के लिए औषधि का काम करता है। 29 सितंबर 2008 में बाइपास सर्जरी के बाद उनका दु:खद निधन हुआ।

प्रभा खेतान के उपन्यासों के कथ्य में प्रधान एवं प्रासंगिक कथाओं को चित्रित किया गया है। वे अपनी अनुभूति की अभिव्यक्ति अधिक विस्तार और सूक्ष्मता से करती है। उन्होंने कथा का संयोजन अत्यंत कलात्मक ढंग से किया है। उनके कथानक का विकास स्वाभाविक गति से हुआ है। उनके उपन्यास घटना की सत्यता के साथ-साथ पाठकों का मनोरंजन करने में भी समर्थ है। प्रभा ने मानव जीवन की, विशेषत: स्त्री जीवन की समस्याओं को सच्चाई के साथ चित्रित किया है। उनके उपन्यासों में युग, समाज तथा जीवन का यथार्थ चित्रण है, जो हमें सोचने को मजबूर करता है। प्रभा खेतान ने गहरी संवेदना और सच्चाई के साथ विस्तृत भावफलक पर

स्त्री की व्यथा की कथा सुनाई है। यह कथा विद्रोही स्वर में मुखरित हुई है। वे अपने उपन्यासों के माध्यम से एक समर्थ, परिपक्व और उत्कृष्ट कथा शिल्पी के रूप में सामने आयी हैं। उनका समस्त उपन्यास साहित्य देश-विदेश की भूमि में आये अनुभव का सच्चा लेखा-जोखा है।

प्रभा के 'तालाबंदी', 'अपने-अपने चेहरे', 'पीली आंधी', 'छिन्नमस्ता' जैसे उपन्यास उनके निजी अनुभवों पर आधारित है। कुछ उपन्यास व्यवसायिक तो कुछ मारवाड़ी समाज की भीतरी घुटन और छटपटाहट को लेकर लिखे गये हैं। प्रभा खेतान ने 'आओ पेपे, घर चले' इस उपन्यास में पाश्चात्य परिवेश में स्त्री के हो रहे शोषण को चित्रित किया है। 'अग्निसंभवा' में आत्मसम्मान जगाने वाली और पुरूष के कंधे से कंधा मिलानेवाली आइवी का चित्रण है। 'एड्स' में विदेशी स्त्री के जीवन का चित्र प्रस्तुत किया है।'तालाबंदी' में अपने व्यावसायिक अनुभव, समस्याएँ एवं संघर्ष है। 'छिन्नमस्ता' में स्वावलंबी, विद्रोही, अधिकार की लड़ाई लड़ने वाली प्रिया के जीवन का वास्तव हैं। 'पीली आंधी' में राजस्थान से व्यवसाय हेतु कलकत्ता में स्थलांतरित मारवाड़ी समाज के जीवन संघर्ष के वर्णन के साथ परिवर्तन चाहनेवाली सोमा के जीवन का भी चित्रण है। 'अपने-अपने चेहरे' स्त्री-पुरूष के संबंधों पर सोचने के लिए मजबूर करता है। 'स्त्री-पक्ष' उपन्यास में घर और समाज में उपेक्षित स्त्री जीवन का चित्रण है। इस प्रकार प्रभा खेतान अपने उपन्यासों के माध्यम से परंपरा को नकारकर आधुनिकता का स्वागत करती दिखाई देती है। उनकी नायिकाएँ देश और समाज के विकास के लिए आत्मनिर्णय और स्वाधीनता का पक्ष लेकर, विभिन्न चुनौतियों को स्वीकारते हुए आगे बढ़ती है।

प्रभा खेतान के उपन्यासों का कथ्यात्मक विश्लेषण करते समय जीवन के प्रति आस्था, जिजीविषा और सकारात्मक दृष्टि, स्त्री-विमर्श, रिश्तों का खोखलापन, औरतों की रूढ़िग्रस्तता, स्त्री की स्वार्थी वृत्ति एवं पूँजीपति मारवाड़ी समाज की विसंगतियाँ आदि चिंतन पक्ष के विविध आयाम उभरकर सामने आते है।

प्रभा खेतान के उपन्यासों में मानव जीवन का यथार्थ चित्रण हुआ है। उनके पात्र समाज से ही उठाए गए है। उनके उपन्यासों के पात्रों में मेहनत,

कर्तव्यपरायणता, आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, देशप्रेम, स्वावलंबन, महत्वकांक्षा, धर्मभीरूता, शोषक-शोषित, भ्रष्टाचारी, स्त्री-लंपट आदि विशेषताएँ दिखाई देती है। उनके उपन्यास अधिकांशत: मारवाड़ी समाज के जीवन को चित्रित करते हैं। अत: इन पात्रों में हमें मारवाड़ी समाज के संस्कार एवं जीवन पद्धति के दर्शन होते है। इनके सभी पात्र अपने अस्तित्व स्थापन के साथ-साथ समाज को नये विचारों की ओर ले जाने के लिए प्रेरित करते है। ये पात्र हमारे अंतर्मन को झकझोर कर रख देते है। हमारे मन मस्तिष्क पर अमिट छाप छोड़ जाते है। इनके उपन्यासों के केंद्र में नारी है। प्रभा ने संवेदनशील प्रवृत्ति और कल्पनाशक्ति के आधारपर अत्याधिक, विस्तृत भावभूमिपर नारी पात्रों का चित्रण किया है। उनके उपन्यासों में शोषण और अत्याचार की शिकार हुई पद्मावती, राधाबाई, निमलीबाई (पीली आंधी), कस्तुरी देवी (छिन्नमस्ता), सुमित्रा (तालाबंदी) आदि है तो नयी परिस्थितियों से पैदा हुई समस्याओं से जूझती एलिजा (आओ पेपे, घर चले), श्रीमती गोयनका (अपने-अपने चेहरे), बड़ी भाभी, चित्रा (पीली आंधी) आदि स्त्री के विभिन्न रूप पाये जाते है। साथ ही उनमें आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी बनकर परंपरागत नारी संहिता को चुनौती देती और स्वयं को स्वावलंबी बनाती स्त्री का चित्रण भी है। वह पूँजीवादी समाज में संस्कारों और आर्थिक विषमताओं से संघर्ष कर अपने व्यक्तित्व का निर्माण करती है। वह परंपरा और रूढ़ियों को तोड़ती हुई अपनी स्वतंत्रता के लिए जूझती हुई दिखाई देती है। इनमें प्रिया (छिन्नमस्ता), रमा (अपने-अपने चेहरे) सोमा (पीली आंधी) आइवी (अग्निसंभवा) आदि प्रमुख हैं।

प्रभा खेतान के कुछ नारी पात्र परंपरा प्रिय है, जो संस्कारों के बंधन में जकड़े हुए प्रतीत होते हैं। उनमें कस्तुरीदेवी (छिन्नमस्ता) सुमित्रा (तालाबंदी) पद्मावती (पीली आंधी) मिसेस एलिजा (आओ पेपे, घर चलें), श्रीमती गोयनका (अपने-अपने चेहरे) आदि नारी पात्र हैं। प्रभा, मरील, हेल्गा, आइलिन कैथी (आओ पेपे, घर चलें), रेवा (तालाबंदी) आइवी (अग्निसंभवा), प्रिया (छिन्नमस्ता) सोमा (पीली आंधी) रमा, (अपने-अपने चेहरे) वृंदा, देविका, पिंकी (स्त्री-पक्ष) आदि विद्रोही पात्र हैं। कुछ नारी पात्र पूरी तरह त्याग की मूर्ति के रूप में दृष्टव्य है। वे अपने परिवार के लिए सबकुछ समर्पित

करने के लिए तैयार है- एलिजा (आओ पेपे, घर चलें), सुमित्रा (तालाबंदी), कस्तुरीदेवी, दाई माँ, तिलोत्तमा (छिन्नमस्ता), पद्मावती, निर्मलीबाई, चित्रा (पीली आंधी), रमा, श्रीमती गोयनका, आरती (अपने-अपने चेहरे), वृंदा (स्त्री-पक्ष) ऐसे ही पात्र हैं। प्रभा जी के कुछ नारी पात्रों में राष्ट्र प्रेम की भावना कूट-कूट कर भरी हुई दिखाई देती है। आइलिन, प्रभा (आओ पेपे, घर चलें), आइवी, प्रभा (अग्निसंभवा) ऐसी ही पात्र है। परिवार को महत्व न देकर अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत प्रमुख नारी पात्र प्रभा, मरील, हेल्गा, प्रिया, सोमा, रमा, नीना, वृंदा, देविका, पिंकी, आदि हैं। कुछ नारियाँ तो अपने प्रेम के झाँसे में पुरूष को फँसाने का भी प्रयास करती है। क्लारा ब्राऊन, देविका, पिंकी जैसी नारियाँ इसी प्रकार की पात्र हैं। प्रभा के पात्र त्याग की मूर्ति, देशप्रेमी तो है ही साथ ही परंपरा को नकारने वाले विद्रोही भी है। ये पात्र यथार्थ की पृष्ठभूमि में चित्रित होने के कारण हमें नवीन जीवन-दृष्टि और प्रेरणा देते हैं।

प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी पात्रों के समान पुरूष पात्रों का स्थान भी महत्वपूर्ण है। ऐय्याशी किस्म के पात्रों में डॉक्टर डी (आओ पेपे, घर चलें), विजय, मिस्टर अग्रवाल, नरेंद्र (छिन्नमस्ता), सांवरमल, मोहन, गौतम, (पीली आंधी), राजेंद्र गोयनका, कुणाल (अपने-अपने चेहरे) अनीश, सुमित (स्त्री-पक्ष) आदि आते हैं। यह पुरूष वर्ग पत्नी के होते हुए पर स्त्री की बाहों में झूलते हुए नजर आते हैं। वे पत्नी से ज्यादा अपनी प्रेमिका से प्रेम करते हैं। पत्नी पर अपना अधिकार जताते हुए उसके साथ दुव्यवर्हार करते हैं। वे पत्नी को भोग्य वस्तु मानते है। प्रभा जी के उपन्यासों में त्याग की मूर्ति और परिवार के लिए सबकुछ न्यौछावर करने वाले पुरूष पात्र भी दिखाई देते है। उनमें डॉ. बेरी, डॉ. ब्रेडले मूर (आओ पेपे, घर चलें), श्यामसुंदर अग्रवाल (तालाबंदी), एण्डू (एड्स) माधोदास रूंगटा (पीली आंधी) है। ईमानदार व्यक्तित्व के रूप में उभरकर आनेवाले पात्र है अजित, शेखर मुखर्जी, रफीक अहमद (तालाबंदी), ओझाजी (पीली आंधी)। नारी को महत्वपूर्ण स्थान देने वाले तथा उसकी इज्जत करने वाले पात्रों में डॉ. ब्रेडले मूर, डॉ. बेरी, शेखर मुखर्जी,फिलिप, प्रो.सुजीत सेन, जावेद है। प्रभा जी के उपन्यासों में लालची एवं स्वार्थी किस्म के पात्र

भी आए है जो केवल अपने बारे में ही सोचते है। जैसे की डॉ. डी, विक्रम, पप्पू, पीनू, सुप्रिय, शिव, नरेंद्र, संजू, विजय, सांवरमल, मोहन, गौतम, लता, राजेंद्र गोयनका, उमेश, रमेश, सुमित, आर्जव, अनीश आदि पात्र है।

प्रभा के उपन्यासों के पात्रों में हमें सजीवता सप्राणता, सहृदयता, मौलिकता, सशक्तता, यथार्थता, बौद्धिकता, स्वाभाविकता, कर्तव्यनिष्ठता, धर्मभीरूता, सत्यनिष्ठता, संस्कारहीनता, आदर्शवाद, विद्रोह, देशप्रेमी, लालची, स्वार्थी, ऐय्याशी, मेहनती, परिवार प्रेमी, नैतिकता, ईर्ष्यालु, कायर, रूढ़िवादी, महत्वकांक्षी, आत्मविश्वासी, आत्मनिर्भर, स्त्री लंपट, भ्रष्टाचारी, त्यागी एवं शोषित आदि विशेषताएँ दिखाई देती हैं। उनके उपन्यासों की सफलता का श्रेय उनकी सहज एवं जीवंत पात्रों की सृष्टि को दिया जा सकता है। प्रभा जी ने अपने सभी उपन्यासों में नये-नये पात्रों की सृष्टि अलग-अलग परिवेश में एक समाजवादी वैज्ञानिक दृष्टि से की है। उनके सभी पात्र अपनी-अपनी भूमिका में अत्यंत सार्थक और अनिवार्य सिद्ध हुए हैं। प्रभा जी के उपन्यासों के पात्र चाहे स्वतंत्र व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व कर रहे हो अथवा वर्ग या समूह का, उनकी उपस्थिति उपन्यास को एक विशिष्ट सार्थकता प्रदान करती है।

प्रभा खेतान के उपन्यासों के पात्र आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने हेतु तथा अपने अस्तित्व की पहचान बनाने के लिए युद्ध स्तर पर क्रियाशील दिखाई देते हैं। प्रिया, आइवी, रमा, श्याम बाबू आदि अनेक संकटों और विसंगतियों का सामना करते हैं। लेखिका ने अपने उपन्यासों के कथ्यों द्वारा यह स्पष्ट किया है कि, आर्थिक परिवेश के कारण दहेज की समस्या, विवाह की समस्या, पारिवारिक संबंधों का टूटना एवं भ्रष्टाचार आदि अनेक समस्याएँ निर्माण हुई है।

प्रभा खेतान के सारे उपन्यासों में सामाजिक समस्या का चित्रण सच्चाई के साथ हुआ है। उनके उपन्यासों में दहेज प्रथा, अनमेल विवाह, विवाहेतर संबंध, अंध:विश्वास, विधवा का कष्टप्रद जीवन, लडकी का घर-बाहर होने वाला शोषण रीतिरिवाज, प्रथाएँ, विवाह पद्धति, नाच-गाना, संतान के प्रति उत्तरदायित्व और संतान का दुर्व्यवहार, परिवार-संबंध-मानमर्यादा, परिवार विघटन और संतान सुख आदि सामाजिक समस्याओं की यथार्थ अभिव्यक्ति हुई हैं। प्रभा खेतान के उपन्यासों में

धार्मिक परिवेश में धार्मिक परंपराएँ, प्रथाएँ, व्रत, उपवास, तीज, त्यौहार आदि का यथार्थ चित्रण हुआ है। इसी के साथ अंधविश्वास एवं पाखंड की और भी उन्होंने अपनी दृष्टि डाली हैं। 'पीली आंधी' में माधो की पत्नी की मिरगी की बीमारी दूर करने हेतु घर के लोग उसे बाबा के पास ले जाते हैं। 'स्त्री-पक्ष' की वृंदा सुमित का प्यार पाने हेतु बाबा के पाखंड में फँस जाती हैं। 'अपने-अपने चेहरे' की रमा ग्रहदोष के बारे में चिंतित हो जाती हैं। 'आओ पेपे, घर चलें' में क्रिसमस का वर्णन है। 'तालाबंदी' में श्याम बाबू उनकी माँ एवं पत्नी का भगवान पर भरोसा बताया गया हैं। 'एड्स' में क्रिश्चियन और मुस्लिमों के बीच संघर्ष का कारण अपने- अपने धर्म की वर्चस्वता स्थापित करने की होड़ माना गया है। 'छिन्नमस्ता' में स्पृश्य और अस्पृश्य समस्या का निरुपण है। 'पीली आंधी' में तीज, त्यौहार, चौथ, व्रत, उपवास, रतिजुगा, मनौतियाँ, अन्नदान, भजन आदि धार्मिक बातों का विस्तार से विवेचन है। इसमें धार्मिक अंधविश्वास एवं पाखंड का भी यथार्थ वर्णन हुआ है। भारत में अज्ञान के कारण भूत-प्रेत संबंधी अंधविश्वास व्याप्त है। आज के विज्ञान युग में भी अंधविश्वास प्रासंगिकता रखता है। 'स्त्री-पक्ष' के पात्र पाखंड एवं अंधविश्वास में लिप्त हैं। प्रभा केवल मानवी संस्कार एवं आचरण के लिए धर्म को अत्यावश्यक मानती है।

प्रभा खेतान के उपन्यासों में सांस्कृतिक परिवेश का चित्रण है पर सांस्कृतिक समस्या कम मात्रा में ही पायी जाती है। 'आओ पेपे, घर चलें' में युवा पीढ़ी के बदलते संस्कारों पर चिंता व्यक्त की गई है। इसमें संस्कारों, कर्तव्य एवं प्यार से ज्यादा अपने अस्तित्व के प्रति प्रयत्नशील पाश्चात्य महिलाओं का चित्रण है। 'तालाबंदी' उपन्यास में प्रेम-समर्पण और नैतिक मूल्यों के पालन के साथ-साथ नैतिक मूल्यों का उल्लंघन भी पाया जाता है। 'अग्निसंभवा' में चीन की प्राचीन संस्कृति की प्रशंसा की गई है। पाश्चात्य समाज के भोगवाद और नैतिक पतन का वर्णन कर एड्स जैसे महत्वपूर्ण प्रश्न पर चिंतन व्यक्त किया है। 'अपने-अपने चेहरे' में बदलते समाज का चित्रण कर रमा और मि. गोयनका के रिश्ते को उछाला गया है। 'पीली आंधी' उपन्यास में सोलह संस्कारों के विधान के पालन के साथ-साथ उन संस्कारों को नकारने वाले पात्र भी

नजर आते हैं। 'स्त्री-पक्ष' उपन्यास में स्त्री को भारतीय संस्कारों में बाँधने वाले समाज का चित्रण है।

प्रभा जी के उपन्यास नारी केंद्रित हैं। उन्होंने नारी के मन की वेदना और अंर्तव्दंव्द को मनोवैज्ञानिक परिवेश में व्यक्त किया है। उनके 'आओ पेपे, घर चलें' की लारा और मरील में प्रेम के अभाव से उपजी वेदना है। नायिका प्रभा अविवाहित होने की त्रासदी भोग रही है। एलिजा क्लारा की तुलना में अपने को हीन समझती है। इस हीनता ग्रंथि से वह सदैव दु:खी रहती है। हेल्गा पति के दुव्यर्वहार से उससे प्रतिशोध लेना चाहती है। कैथी प्रेम को प्राप्त न करने के कारण कुंठित है। आइलिन का निराधार जीवन उसके मन को असंतुलित करता है। 'अग्निसंभवा' की आइवी अपने पुत्र की हत्या होने के पश्चात मानसिक संतुलन खो बैठती है। उसका हताश-निराश होना और निरंतर रोते रहना उसकी आत्मपीड़ा का द्योतक है। 'एड्स' की प्रभा अविवाहित होने के कारण अकेलेपन की पीड़ा से ग्रसित है। 'छिन्नमस्ता' की प्रिया और 'अपने-अपने चेहरे' की रमा एक ओर व्यवसायिक सफलता और दूसरी ओर परिवार और समाज की उपेक्षा से व्दंव्दात्मक अवस्था में है। उनमें प्रतिशोध की भावना बलवती होती है। दोनों में प्रेम और यौन के प्रति लगाव और झुकाव दिखाई देता है। 'पीली आंधी' की सोमा दांपत्य जीवन की असफलता की वजह से मानसिक दृष्टि से अशांत है। 'स्त्री-पक्ष' की वृंदा समस्याओं के कारण हीनता बोध एवं आत्मपश्चाताप दग्ध अवस्था में है। इस तरह प्रभा खेतान के उपन्यासों में मनोविज्ञान की पृष्ठभूमि में पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं को उभारा गया है। राजनीतिक परिवेश और उससे जुड़ी समस्याएँ प्रभा जी के उपन्यासों में यथार्थ रूप में चित्रित हुई है। प्रभा जी ने अपने 'आओ पेपे, घर चलें' में श्वेत-अश्वेत की भयंकर राजनीति का वर्णन किया है। 'तालाबंदी' में पूँजीवाद के विरोध में सर्वहारा वर्ग के संघर्ष का वर्णन है। 'अग्निसंभवा' में सत्ता का घिनौना चेहरा समाज के सामने पेश किया गया है। 'एड्स' उपन्यास के माध्यम से आतंकवाद और उससे निर्मित समस्याओं को उजागर किया गया है। 'पीली आंधी' में स्वतंत्रता पूर्व की राजनीति का वर्णन है। प्रभा खेतान की यह विशेषता हैं, कि उन्होंने राष्ट्रीय तथा आंतरराष्ट्रीय राजनीति की चर्चा करते हुए इराक युद्ध, युद्ध

के परिणाम, युद्ध की विभीषिका, हिंदू-मुस्लिम संघर्ष, मुस्लिम-ईसाई संघर्ष, सत्ता और विद्यार्थी, सत्ता-परिवर्तन आदि जैसी गहन और चिंताप्रद समस्याओं का वास्तव वर्णन किया है।

प्रभा जी के उपन्यासों की रचना सहज एवं वास्तविक धरातल पर हुई है। अपने व्यक्तिगत ठोस, अनुभवों की वास्तविकता के चलते कलावाद का मोह उन्हें ग्रसित नहीं कर सका। इसलिए उनके उपन्यास का कथानक सजीव बन पड़ा है। उनकी भाषा में बौद्धिकता तथा नई प्रयोगधर्मिता के दर्शन होते है। उनके साहित्य में विविधता है, इसलिए उनकी भाषा में भी विविधता दिखाई देती है। उनके उपन्यासों में अंग्रेजी, अरबी, फारसी, संस्कृत, बिहारी, राजस्थानी एवं मारवाड़ी भाषाओं के शब्द पाए जाते है। उनकी सूक्तियाँ तो गागर में सागर भरने का काम करती है। अनेक जगहों पर उचित मुहावरों के प्रयोग ने इनके उपन्यासों में चार चाँद लगा दिए है। उनका संपूर्ण साहित्य सहज एवं बोधगम्य भाषा एवं विशिष्ट शैली के कारण हिंदी साहित्य जगत में अपनी अलग पहचान रखता है। इनके उपन्यासों में वर्णनात्मक शैली, बिंबात्मक शैली, डायरी शैली, आत्मकथात्मक शैली, फ्लैश बैक शैली, पत्रात्मक शैली, प्रश्नात्मक शैली, विश्लेषणात्मक शैली, एकरसतापूर्ण भाषा शैली आदि विभिन्न शैलियों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में हुआ है। प्रभा खेतान की भाषा में जहाँ एक ओर प्रेम की गरमाहट और संवेदना है वही दूसरी ओर उसमें नफरत और आक्रोश भी दिखाई देता है। उनके उपन्यासों में कलात्मक ऊँचाई दिखाई देती है।

समकालीन महिला उपन्यासकारों ने अपने उपन्यास साहित्य में नारी संबंधी अवधारणाओं को अभिव्यक्ति दी है। इसमें नारी के बहुआयामी व्यक्तित्व की पहचान होती है। समकालीन महिला लेखिकाओं के उपन्यासों की नायिकाएँ समझौतावादी, विक्षिप्त, पलायनवादी, हारी हुई प्रतीत होती है। उनमें प्रगतिशील दृष्टिकोण कम दिखाई देता है। लेकिन नारीवादी लेखन में अपनी जगह बनाने वाली प्रभा के नारी पात्र शिक्षित, अधिकारों के प्रति सजग, स्वाभिमानी एवं स्त्री के अस्तित्व प्राप्ति हेतु संघर्षरत दिखाई देते है।

नारी के प्रति प्रभा खेतान का दृष्टिकोण आधुनिक है। इनके उपन्यासों ने आधुनिक युग का वास्तव चित्रण हुआ है। प्रभा खेतान ने जिस काल में लेखन प्रारंभ किया उस समय स्त्री सुधार संबंधी आंदोलन जोर-शोर से चल रहे थे। जिसका प्रभाव उनकी कृतियों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। उन्होंने कुशल उपन्यासकार की भाँति अपने उद्देश्यों की सिद्धि हेतु अपने भावों और विचारों को सहज अभिव्यक्ति प्रदान की है। उन्होंने उन समस्त मान्यताओं पर तीक्ष्ण प्रहार किया है। जो स्त्री के व्यक्तित्व निर्माण तथा प्रगति में बाधक सिद्ध हुई है। प्रभा खेतान ने नवीन मूल्यों का प्रतिपादन किया है। प्रेमचंद युग से स्त्री संबंधी बदलते प्रतिमानों को स्वीकारने के साथ ही वे नारी की सामाजिक तथा वैयक्तिक दोनो रूपों में मुक्ति चाहती है।

स्त्री-पुरूष के मध्य प्राकृतिक जैविक अंतर होने के बावजूद स्त्री की मानसिक शक्ति कला के सृजन में अपना विशेष अर्थ रखती है। नारी के अनुभव और नारी का बोध पुरूष की तुलना में अनेक अर्थों से भिन्न हो सकता है। वह अपनी निजता को अपने ढंग से रखती है। स्त्री के अपने निजी अनुभव, स्त्री ही स्वाभाविकता से लिख सकती है, क्योंकि कल्पना और यथार्थ में काफी अंतर होता है। महिला लेखिकाओं में नारी मन की परतों को खोलने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इन्होंने अपने भोगे हुए यथार्थ और परिवेश को प्रस्तुत किया है। कई लेखिकाएँ 'बोल्ड लेखिकाएँ' कहलाने लगी। हिंदी साहित्य में उषा प्रियंवदा, अलका सरावगी, मैत्रेयी पुष्पा, ममता कालिया, नासिरा शर्मा, कृष्णा सोबती, मेहरून्निसा परवेज, राजी सेठ आदि अनेक लेखिकाओं का योगदान उल्लेखनीय है। इनमें प्रभा खेतान का विशेष स्थान है। वे यथार्थवादी विचारधारा की प्रबल समर्थक और प्रगतिशील लेखिका हैं।

साहित्यिक उपलब्धियाँ-

प्रभा खेतान के उपन्यास उनके भोगे हुए जीवन के प्रामाणिक दस्तावेज हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं में अपने अतीत को समेट कर उसे वर्तमान में रखना चाहा है। उन्होंने अपने उपन्यासों में केवल नारी विमर्श की बात नहीं की बल्कि प्रतीकों और नियमों के जरिये उनकी जड़ों तक पहुँचना चाहा है। उन्होंने अपने आप में धनाढ्य तथा व्यवसाय प्रिय समझे जाने वाले मारवाड़ी समाज में स्थित सामाजिक रूढ़ियों,

परंपराओं तथा विसंगतियों के प्रति विद्रोहात्मक विचार व्यक्त किये है। प्रभा जी ने अपने समस्त उपन्यास साहित्य में व्यापार जगत की हलचल, राजनीतिक उठापटक समाज की सड़ी-गली मान्यताएँ और इन समस्त अंगों से दो-चार होती स्त्री का चित्रण किया है। साथ ही स्त्री के परंपरागत स्थान में परिवर्तन लाकर उसे सामाजिक और आर्थिक रूप में स्वतंत्र करने की कोशिश की है। प्रभा खेतान ने उपन्यास साहित्य के माध्यम से समाजवाद पर आधारित एक नये समाज की स्थापना करने का प्रयत्न किया है। ऐसा समाज स्थापित कर प्रभा खेतान स्त्री को अधिक मानवी और अधिकार संपन्न बनाना चाहती है। साथ ही वह समाज व्यवस्था में स्थित मूल्यों में परिवर्तन की माँग करती हुई नजर आती है।

प्रभा के उपन्यासों के नारी पात्र यह सिद्ध करते है कि आज की नारी सिर्फ संघर्ष की गाथा नहीं बल्कि आधुनिक संसार की वह अनमोल निधि है। वह निर्णय लेने के लिए सक्षम है। उसका अस्तित्व अब अबला नहीं बल्कि सबला में परिवर्तित हो गया है। इसलिए 'छिन्नमस्ता' की प्रिया साहस के साथ अपनी मुक्ति का शंखनाद करती है। प्रभा खेतान की नारी स्वतंत्रता के दरवाजे खोलने हेतु प्रेरित करती है। एक बात निश्चित है जहाँ भी स्त्री ने नये पथ का अनुसरण किया है, अपने व्यक्तित्व की माँग रखी है, वहाँ उसे संघर्ष पथ से गुजरना पड़ा है। वहाँ उसका मार्ग सुकर नहीं रहा है। वह लहूलहान भी हुई है पर प्रभा खेतान नई दृष्टि और नई सोच लेकर सामने आयी है। उन्होंने स्त्री की निराशा, हार और कुंठा के स्थान पर आशा, जीत और स्वातंत्र्य को स्थापित किया है।

प्रभा खेतान स्त्री का ऐसा रूप बनाना चाहती है जो देश और समाज को आगे बढ़ाये । इसलिए लेखिका ने समाज की कुरीतियों का पर्दाफाश करते हुए उन्हें समाप्त करने हेतु आवाज उठायी है। हमारे समाज के पुरूषों को यह बताने का प्रयास किया है कि नारी किसी भी समाज की हो वह अपना अस्तित्व साबित कर सकती है। अनेक उपलब्धियों के साथ प्रभा खेतान सफल, सशक्त, उपन्यासकार के रूपों में हमारे सामने प्रस्तुत होती है। उनका उपन्यास साहित्य प्रगतिशील विचारधारा का संवाहक है। उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि यह है के वे यथार्थ का चित्रण निड़रता के

साथ करती है। आधुनिक नारी जीवन की विभिन्न समस्याओं को प्रकट करते हुए उन्होंने प्रभा और प्रिया के माध्यम से पाठकों को प्रेरणा दी है। उनमें आधुनिक समाज को जागृत करने की भावना दिखाई देती है। इस प्रकार प्रभा खेतान ने वैश्विक धरातल पर नारी की स्थिति और गति को उद्‌घाटित कर उसे प्रेरणा देने का महनीय एवं अनुपम कार्य किया है। प्रभा खेतान का यह योगदान प्रेरणादायी और प्रशंसनीय है।

अंत में पुरूष प्रधान संस्कृति में जकड़ी हुई उन सभी स्त्रियों के लिए पथ प्रदर्शक के रूप में यह शोध प्रबंध अवश्य सहायक सिद्‌ध होगा।